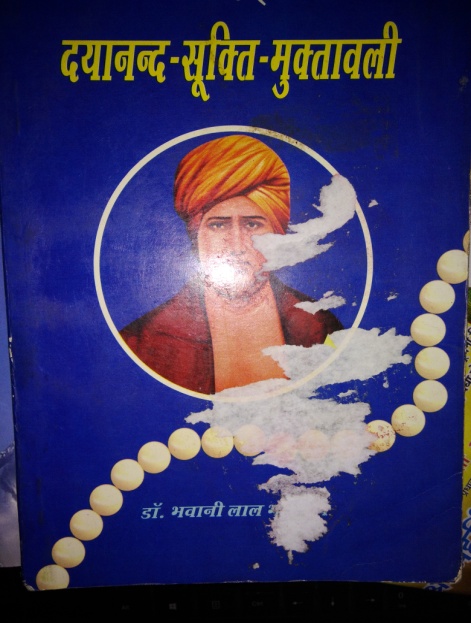
**ओ३म्**

**‘ऋषि दयानन्द की लघु पुस्तक भ्रान्तिनिवारण की प्रमुख प्रभावशाली सूक्तियां’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 विगत पांच हजार वर्षों में वेदों के मर्मज्ञ व अपूर्व विद्वान ऋषि दयानन्द जी ने बड़े व छोटे अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि तथा आर्याभिविनय उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं वहीं उनके अनेक लघु ग्रन्थ भ्रान्तिनिवारण, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि तथा संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि हैं जिनमें अनेकानेक महत्वपूर्ण विषयों, सिद्धान्तों, मान्यताओं व कथनों को स्थान ला है। ऋषि भक्त विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन और कार्यों पर **‘नवजागरण के पुरोधा’** सहित अनेकानेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया है। डा. भारतीय जी का एक लघु ग्रन्थ हैं **‘दयानन्द-सूक्ति-मुक्तावली’।** इस ग्रन्थ के दो संस्करण प्रकाशित हुए हैं। दूसरा संस्करण आर्य प्रकाशन, दिल्ली ने सन् 2009 में प्रकाशित किया था। पुस्तक की पृष्ठ संख्या 84 तथा मूल्य रू. 25.00 है। इस ग्रन्थ में लेखक महोदय ने ऋषि दयानन्द के 21 ग्रन्थों से संकलित कालजयी सुभाषितों का अपूर्व संग्रह किया है। संकलन की 26 वर्ष पूर्व लिखित 3 पृष्ठीय विस्तृत भूमिका के अन्तिम पैरा में विद्वान लेखक ने कहा है **‘अन्त में इस भूमिका का समापन करते हुए मैं पाठकों से निवेदन करूंगा कि स्वामी दयानन्द के मन और मस्तिष्क को गहराई से जानने, हिमालय के तुल्य उनके विराट् व्यक्तित्व से परिचित होने तथा महासागर के समान उनके धीर, गम्भीर वैदुष्य, देशभक्ति, लोकहित की प्रबल भावना तथा महान् आस्तिक्य भाव को यदि वे हृदयंगम करना चाहें तो इस दयानन्द-सूक्ति-मुक्तावली का आद्योपान्त अनुशीलन अवश्य करें।’** अस्तु। अब भ्रान्तिनिवारण की सूक्तियों का आनन्द लीजिए।

1- मेरा जीवन लोकहितार्थ है- जो मैं संसार का ही भय करता और सर्वज्ञ परमात्मा का कुछ भी नहीं, कि जिसके अधीन मनुष्य के जीवन मृत्यु और सुख दुःख हैं तो मैं भी ऐसे ही अनर्थक वाद-विवादों में मन देता, परन्तु क्या करूं मैं तो अपना तन, मन, धन सब सत्य के प्रकाशनार्थ (ईश्वर को) समर्पण कर चुका हूं। मुझसे खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता किन्तु संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझ को चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है।

2- अंग्रेजी राज्य में विद्या प्रचार- जब से अंग्रेजों ने इस देश में राज किया तो इन्होंने यह बात बहुत अच्छी की कि सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार करके प्रजा को समान दृष्टि से सुधारा। परन्तु कुछ कुछ निज धर्म (ईसाइयत) का पक्ष(पात) करते ही रहे।

3- वेदभाष्य पूर्ण होने से क्या होगा?- परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला कि वेद भाष्य सम्पूर्ण हो जावे तो निस्संदेह इस आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जावेगा कि जिसके मेटने और झांपने को किसी का सामर्थ्य न होगा।

4- आर्य शब्द वेदोक्त है- पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न ने हिन्दू शब्द और ग्रन्थ में देखा है कि जिसके अर्थ गुलाम वा काफिर आदि के हैं और जो कि आर्यावर्तियों को कलंक रूप का नाम यवनादिक की ओर से है, और आर्य शब्द जिसके अर्थ श्रेष्ठ के हैं, वह वेदों में अनेक ठिकाने मिलता है।

5- प्रामाणिक ग्रन्थ कितने हैं- मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग (ग्रन्थों को प्रमाण) मानता हूं। ........ जो जो कर्मकाण्ड वेदानुकूल हैं उस सबको मानता हूं, उससे विरुद्ध को नहीं।

6- वेद में कोई बात युक्तिविरुद्ध नहीं- मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत (विश्वास) है।

7- मेरा लक्ष्य लोकहित- सिवाय अन्तर्यामी (परमेश्वर) के जीव (संसार के मनुष्य) नहीं जान सकते कि मैं लोकहित चाहता हूं वा केवल विजय अर्थात् नाम की प्रसिद्धि।

8- वेदों में एकेश्वरवाद है- चारों वेदों में एक से दूसरा ईश्वर नहीं माना है (अर्थात् वेदों के अनुसार ईश्वर केवल एक ही है) और न ईश्वर के तुल्य (दूसरे को) पूजना कहा है।

9- उपास्य देव परमात्मा ही है- सब देवों का देव, पूजनीय और उपासना योग्य एक अद्वितीय ईश्वर ही है।

10- आर्य लोग परमात्मा को कैसा मानते हैं- सब जगत को ब्रह्म मानना तथा ब्रह्म को जगत रूप समझना यह हिन्दुओं की बात होगी, आर्यों की नहीं। हम आर्यावर्तवासी ब्राह्मणादि वर्ण और ब्रह्मचर्यादि आश्रमस्थ ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त परमेश्वर को वेद रीति से ऐसा मानते आयें हैं कि वह शुद्ध, सनातन, निर्विकार, अज, अनादि, रूप जगत् के कारण से कार्य रूप जगत् की रचना, पालन और विनाश करने वाला है।

11- हिन्दू कौन हैं?- हिन्दू उसको कहते हैं कि जो वेदोक्त सत्य मार्गसे विरुद्ध चले।

12- मेरा प्रयास: सत्य धर्म की स्थापना- जो आर्यों का वेदोक्त सनातन धर्म है उसको पण्डितजी (महेशचन्द्र न्यायरत्न) के समान विचार करने वाले (अर्थात् पौराणिक) मनुष्यों ने उलटा दिया है। उस उलटे मार्ग को उलटा कर पूर्वोक्त धर्म का स्थापन मैं करना चाहता हूं।

यद्यपि पुस्तक का आनन्द तो पूरी पुस्तक के पढ़ने से ही मिलता है परन्तु इन सूक्तियों को पढ़ने से भी एक प्रकार से पुस्तक की मुख्य बातें ज्ञात हो जाती हैं। लेखक ने इस पुस्तक को लिख कर महर्षि दयानन्द के अधिकांश व प्रायः सभी प्रमुख ग्रन्थों का आंशिक अध्ययन पाठकों को करा दिया है। यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। यह सभी के पास होनी चाहिये और इसका अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिये। जिन ग्रन्थों को इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है, उनके नाम हैं 1- सत्यार्थप्रकाश, 2’ संस्कारविधिः, 3- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, 4- आर्याभिविनयः, 5- सत्यधर्म विचार: (मेला चान्दपुर), 6- गोकरुणानिधिः, 7- वेदान्तिध्वान्तनिवारणम्, 8- व्यवहारभानु, 9- भ्रान्तिनिवारण, 10- भ्रमोच्छेदन, 11- आर्याेद्देश्यरत्नमाला, 12- पंचमहायज्ञविधिः, 13- वेद विरुद्धमतखण्डनम्, 14- शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारणम्, 15- भागवतखण्डनम्, 16- संस्कृत वाक्य प्रबोध, 17- प्रतिमापूजन विचार (हुगली शास्त्रार्थ), 18- सत्यासत्य विवेक (बरेली शास्त्रार्थ), 19- सद्धर्म विचार, 20- सत्यार्थप्रकाश: प्रथम संस्करण, 21- पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी), तथा परिशिष्ट- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका: एक अध्ययन (यह एक विस्तृत लेख है)। कुछ अन्य सामग्री भी पुस्तक में दी गई है।

इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**